Page No.:
Date: / /

→ समन्वय व विकास ←

शिक्षा प्रशासन एवं प्रबन्धन एक व्यापक प्रक्रिया है। इसके अन्तर्गत राष्ट्र की आवश्यकता, संसाधन आदि सम्मिलित होते हैं। प्रबन्धन का अर्थ स्पष्ट करते हुए —

हेनरी फेयोल → ने कहा है कि " प्रबन्धन एक सार्वभौमिक विज्ञान है जो वाणिज्य, उद्योग, राजनीति, धर्म युद्ध या जन कल्याण सभी सभी पर समान रूप से लागू होता है।" वहीं दूसरी तरफ टेलर महोदय ने स्पष्ट किया है कि " वैज्ञानिक प्रबन्धन के आधार भूत सिद्धान्त हमारे साधारण से साधारण व्यक्तिगत कार्यों को लेकर विशाल निगमों के कार्यों तक लागू होते है। अतः उपर्युक्त परिभाषाओं को दृष्टिगत रखते हुए शैक्षिक प्रबन्धन के निम्नांकित क्षेत्र है

Page No.:
Date : / /

1- शैक्षिक उपलब्धि हेतु उत्पादक प्रबन्धन।

2- शिक्षण संचालन के उत्पादन लिए वित्तीय प्रबन्धन।

3- शिक्षण संस्थान को प्रोन्नत करने के लिए प्रबन्धन।

4- शिक्षण संस्थान के संसाधनों का वितरण हेतु प्रबन्धन

5- शिक्षण संस्थान मे क्रय हेतु क्रय प्रबन्धन

6- शिक्षण संस्थान में स्टाफ, सामान, छात्रों को लाने-ले जाने हेतु परिवहन प्रबन्धन

7- संस्थान के विकास हेतु प्रबन्धन।

8- शिक्षक कर्मचारी आदि की व्यवस्था, पद व भूमिका का निर्धारण करना

शिक्षण संस्थान के मुख्य घटक

मुख्य आठ प्रकार के घटक है।

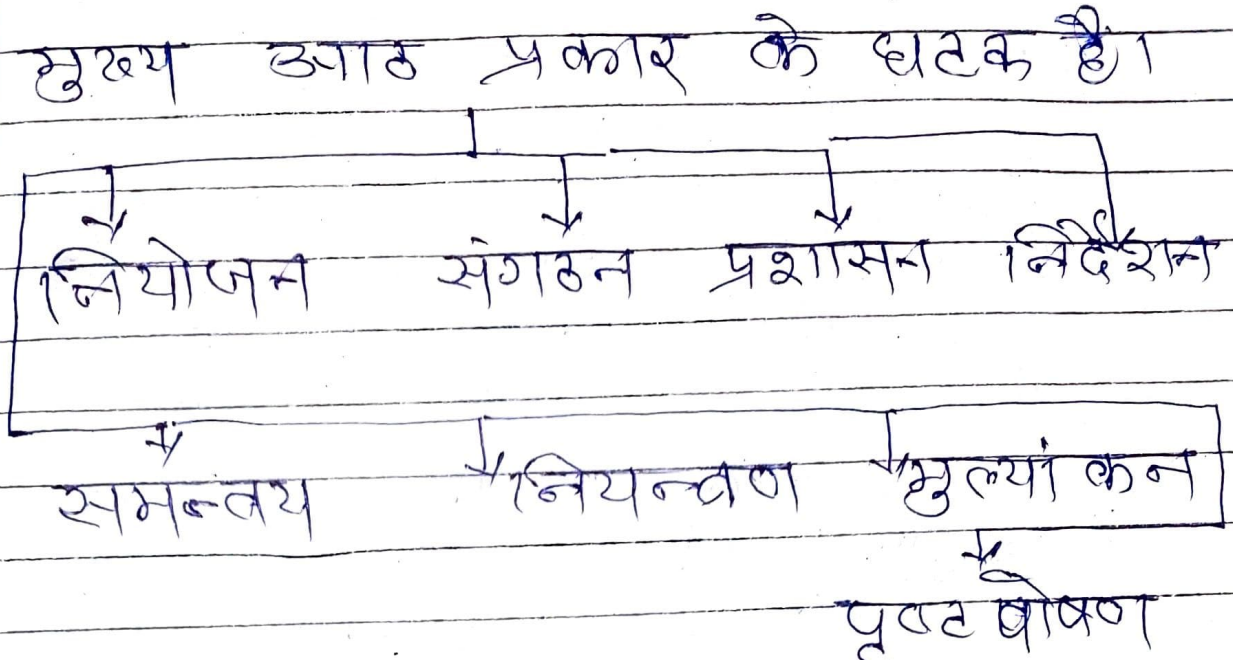

समन्वय का अर्थ →

प्रबन्धन में समन्वय का तात्पर्य है कि शिक्षण संस्थान की विभिन्न क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करना। प्रबन्धन की प्रक्रिया में विभिन्न व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धो एवं क्रियाओं में समन्वय लाना अति आवश्यक है क्योंकि समन्वय द्वारा कार्य की प्रभावशीलता बढ़ती है और शिक्षण के लक्ष्यो की प्राप्ति

आसानी या सुगमता से होती है। प्रधानाचार्य या प्रधानाध्यापक को सामाजिक आर्थिक भौतिक शक्तियों का उपयोग करके शिक्षण संस्थान की विभिन्न क्रियाओं को एक ही दिशा की ओर उन्मुख करना होता है।

अतः समन्वय की क्रिया शिक्षण संस्थान की कार्यशीलता के लिए प्रशासन के नियोजन व्यवस्था, प्रशासन, पर्यवेक्षण तथा नियन्त्रण आदि पक्षों में भी समन्वय होना आवश्यक है अतः प्रबन्धन में समन्वय की विभिन्न क्रियाओं, सम्बन्धों एवं प्रयत्नों के मध्य उचित तालमेल बैठाना मिलजुल कर कार्य करना तथा इन सभी को एक सूत्र में बाँधना ही समन्वय है। प्रबन्धन में समन्वय को और अधिक स्पष्ट करने के लिए निम्न परिभाषाएँ हैं।

Page No.:
Date: / /

— परिभाषाएँ —

मूने तथा रैले के अनुसार →

"समन्वय किसी सामान्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु क्रियाओं में एकता लाने के सामूहिक प्रयत्नों का व्यवस्थापूर्ण प्रकाश है"

कूण्टज और ओ डोनेल के अनुसार

"समन्वय प्रशासन का एक प्रकार्य मात्र ही नहीं अपितु वह तो प्रशासन का सार है"

एफ० ई० एल० ब्रीच →

"समन्वय का अर्थ विभिन्न सदस्यों में कार्यों को ठीक प्रकार विभाजित करना एवं यह निश्चित करना कि प्रत्येक सदस्य इन कार्यों को सद्भावपूर्वक कार्य कर रहे संगठन में संतुलन व सक्ती है"

शिक्षा में समन्वय

समन्वय का क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक एवं विस्तृत है। शिक्षा प्रक्रिया के प्रत्येक क्षेत्र- नियोजन, संगठन, प्रशासन, पर्यवेक्षण, निरिक्षण, प्रबन्धन, नियन्त्रण आदि सभी पक्षों में समन्वय महत्वपूर्ण है। शिक्षण संस्थान प्रबन्धन में समन्वय को अध्ययन की दृष्टि से निम्नांकित क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है—

1- पाठ्य क्रम/शैक्षिक क्रियाओं में समन्वय

2- पाठ्य सहगामी क्रियाओं में समन्वय

3- प्रशासनिक क्रियाओं में समन्वय

Page No.:
Date: / /

(1) पाठ्यक्रम/शैक्षिक क्रियाओं में समन्वय →

इसके अन्तर्गत शैक्षिक क्रियाओं से सम्बन्धित शिक्षण और परिक्षण इत्यादि को सम्मित किया जाता है।
इसके लिए शिक्षण संस्थान के प्रधानाचार्य को शिक्षकों एवं छात्रों की पारस्परिक क्रियाओं में समन्वय करना होता है।
इसमें शिक्षण के साथ परीक्षण की क्रिया भी महत्वपूर्ण क्रियाओं को होती है तभी जाता है। और इसमें प्रमुख शिक्षण संस्थान को समय तालिका बनाने की होती है। शिक्षण में समय तालिका इस प्रकार बनाई जाती है जिससे शिक्षकों को आपस में कठिनाई या समस्या न हो।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं में समन्वय

बालक के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षण संस्थान में विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है जैसे- खेल- कूद, स्काउट, गाइड एन० सी० सी० (NCC) शैक्षिक भ्रमण सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि इस पाठ्य सहगामी क्रियाओं का दायित्व प्रधानाचार्य को शिक्षकों की योग्यता एवं क्षमता को ध्यान में रखते हुए सौंपना चाहिए जिससे सम्बन्धित क्रियाओं को ठीक प्रकार से व लगन के साथ सम्पन्न किया जा सके।

प्रधानाचार्य को चाहिए कि वह अन्य शिक्षकों को भी प्रेरित करे वे सम्बन्धित क्रियाओं के संचालन में सहयोग प्रदान करना।

Page No.:
Date: / /

प्रशासनिक क्रियाओं मे समन्वय -

इसके अन्तर्गत प्रधानाचार्य को शैक्षिक एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अतिरिक्त शिक्षण संस्थान के संचालन हेतु प्रबन्धन के पक्षों के व्यक्तियों मे समन्वय करना होता है। जैसे शिक्षकों, प्रबन्ध समिति की बैठक तथा आदेशो के अनुपालन मे समन्वय की आवश्यकता होती है। इसके अलावा जिला स्तर पर राज्य स्तर पर शिक्षा विभाग से एवं विभिन्न उच्च अधिकारियों से समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता होती है प्रधानाचार्य को शिक्षण संस्थान के संचालन हेतु शिक्षा विभाग के नियमों की परिनामावलियें तथा आदेशो का अनुपालन करना होता है।

इसके अलावा जिला स्तर पर राज्य स्तर एवं शिक्षा विभाग से एवं विभिन्न उच्च अधिकारी समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता होती है प्रधानाचार्य को शिक्षण संस्थान के संचालन हेतु शिक्षा विभाग के नियमों, परिनियमावली तथा अध्यादेशों का अनुपालन करना होता है तथा वित्तीय अनुदान एवं मान्यता प्राप्त के राज्य तथा जिला स्तर पर अधिकारियों से सम्पर्क करना होता है शिक्षण संस्थान की सही संचालन एवं विकास के लिए उच्च अधिकारियों से समन्वय को करना होता है जिससे शिक्षण संस्थान को विकास एवं संचालन में गतिशीलता प्राप्त हो सके।